सीतासहस्रनामस्तोत्र

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

॥ श्रीः ॥

सीतासहस्रनामस्तोत्रम् ।

श्रीमदद्भुतरामायणसमुद्धृतम् ।

मुरादाबादवास्तव्यपंडितज्वाला-
प्रसादमिश्रविरचितया
भाषाटीकया समलंकृतम् ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण–सन् १९९७ संवत् २०५३

मूल्य ६ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ सीतासहस्रनाम ।



भाषाटीकासहित ।

ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वारामःकमललोचनः ॥
प्रोन्मील्यशनकैरक्षिवेपमानोमहाभुजः ॥ १ ॥

टीका—कमललोचन राम ब्रह्माजीके वचन सुनकर शनैः २ नेत्र खोल कंपित होते हुए महाभुज ॥ १ ॥

प्रणम्यशिरसाभूमौतेजसाचापिविह्वलः ॥
भीतःकृतांजलिपुटःप्रोवाचपरमेश्वरीम् ॥ २ ॥

टीका—भूमिमें शिर झुकाय प्रणामकर उनके तेजसे विह्वलहो भीतकी समान हाथ जोड परमेश्वरीसे बोले ॥ २ ॥

कात्वंदेविविशालाक्षिशशांकावयवांकिते ॥
नजानेत्वांमहादेवियथावद्ब्रूहिपृच्छते ॥ ३ ॥

टीका—हे चन्द्रखण्डसे अंकित विशाललोचनी

तुम कौन हो ? हे महादेवि ! हम तुमको नहीं जानते, पूछते हुए हमसे अपनेको वर्णन करो ॥ ३ ॥

रामस्यवचनंश्रुत्वाततःसापरमेश्वरी ॥
व्याजहाररघुव्याघ्रंयोगिनामभयप्रदा ॥ ४ ॥

टीका–तब वह परमेश्वरी रामके वचन सुनकर योगियोंको अभय देनेवाली रघुनाथजीसे बोली॥ ४ ॥

मांविद्धिपरमांशक्तिंमहेश्वरसमाश्रयाम् ॥
अनन्यामव्ययामेकांयांपश्यन्तिमुमुक्षवः ॥५॥

टीका–मुझे महेश्वरके आश्रितवाली परमशक्ति जानों, मैं अनन्य अविनाशी एकहूं मुमुक्षुजन मुझको देखतेहैं ॥ ५ ॥

अहंवैसर्वभावानामात्मासर्वांतराशिवा ॥
शाश्वतीसर्वविज्ञानासर्वमूर्तिप्रवर्तिका ॥ ६ ॥

टीका–मैं सब भावोंकी आत्मा सबके अन्तरमें स्थित शिवा हूं, मैंही निरन्तर रहनेवाली सब विज्ञान और सब मूर्तिकी प्रवृत्त करनेवाली हूं ॥ ६ ॥

अनंतानंतमाहिमासंसारार्णवतारिणी ॥

दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेपदमैश्वरम् ॥ ७ ॥

टीका—मैं अनन्त अनन्तमहिमावाली संसारसागरसे तारनेवाली हूं, तुमको दिव्यनेत्र देती हूं मेरा ईश्वरसम्बन्धी पद देखो ॥ ७ ॥

इत्युक्त्वाविररामैषारामोऽपश्यच्चतत्पदम् ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशंविष्वक्तेजोनिराकुलम् ॥८॥

टीका—यह कह वह मौन हुई, और रघुनाथ उसके पदको देखने लगे, जो करोड सूर्यकी समान सब ओरसे परिपूर्ण था ॥ ८ ॥

ज्वालावलिसहस्राढ्यंकालानलशतोपमम् ॥
दंष्ट्राकरालदुर्द्धर्षंजटामण्डलमंडितम् ॥ ९ ॥

टीका—सहस्रों ज्वालासमूहोंसे व्याप्त सैंकडो कालानलकी समान करालदंष्ट्रासे दुर्धर्ष, जटामंडलसे मंडित॥९॥

त्रिशूलवरहस्तंचघोररूपंभयावहम् ॥
प्रशाम्यत्सौम्यवदनमनंतैश्वर्यसंयुतम् ॥ १० ॥

टीका—त्रिशूल हाथमें लिये, घोर रूप भयावने, प्रशान्त सौम्यवदन, अनन्त ऐश्वर्यसे संयुक्त ॥ १० ॥

चन्द्रावयवलक्ष्माढ्यंचन्द्रकोटिसमप्रभम् ॥
किरीटिनंगदाहस्तंनूपुरैरुपशोभितम् ॥ ११ ॥

टीका–चन्द्रके खण्ड और लक्ष्मीसे युक्त करोड चन्द्रमाकी समान कान्तिमान्, किरीट गदा हाथमें लिये, नूपुरोंसे शोभित ॥ ११ ॥

दिव्यमाल्याम्बरधरंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥
शंखचक्रकरंकाम्यंत्रिनेत्रंकृत्तिवाससम् ॥ १२ ॥

टीका–दिव्यमाला वस्त्र धारण किये, दिव्य गंधका अनुलेपन लगाये, शंख चक्र हाथमें लिये, त्रिनेत्र, कृत्तिवास ॥ १२ ॥

अन्तःस्थंचांडबाह्यस्थंबाह्याभ्यंतरतःपरम् ॥
सर्वशक्तिमयंशांतंसर्वाकारंसनातनम् ॥ १३ ॥

टीका–अन्तरमें स्थित तथा अण्डकोशके बाह्यमें स्थित, बाहर भीतरसेभी परे, सर्वशक्तिमय शान्त सर्वाकार सनातन ॥ १३ ॥

ब्रह्मेंद्रोपेंद्रयोगींद्रैरीडयमानपदांबुजम् ॥

---

१ पुंस्त्वमार्षम् । एवमेवोत्तरत्र विशेषणविषये बोद्धव्यम् ।

सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोक्षिशिरोमुखम् ॥ १४ ॥

टीका—ब्रह्मा इन्द्र उपेन्द्र योगीन्द्रोंसे प्रार्थित चरण कमल, सब ओरसे कर चरण नेत्र और शिरवाले ॥ १४ ॥

सर्वमावृत्त्यतिष्ठंतंददर्शपदमैश्वरम् ॥

दृष्ट्वाचतादृशंरूपंदिव्यंमाहेश्वरंपदम् ॥ १५ ॥

टीका—सबको आवृतकर स्थित होते हुए उस ईश्वरसम्बन्धी पदका दर्शन किया, इस प्रकारका उस दिव्य माहेश्वरके पदको देखकर ॥ १५ ॥

तयैवचसमाविष्टःसरामोहृतमानसः ॥

आत्मन्याधायचात्मानमोंकारंसमनुस्मरन् १६॥

टीका—रामचन्द्र मनके हरण होजानेमें उनसे आविष्ट हो हृतमन होकर आत्माको आत्मामें ध्यान कर ॐकारका स्मरणकर ॥ १६ ॥

नाम्नामष्टसहस्रेणतुष्टावपरमेश्वरीम् ॥

ॐसीतोमापरमाशक्तिरनंतानिष्कलामला १७॥

टीका—१००८ एकहजार आठ नामसे परमेश्व-

रीकी स्तुति करने लगे, ॐ सीता, उमा, परमा, शक्ति, अनन्ता, निष्कला, अमला ॥ १७ ॥

शांतामाहेश्वरीनित्याशाश्वती १० परमाक्षरा ॥
अचिन्त्याकेवलानंताशिवात्मापरमात्मिका १८

टीका—शान्ता, माहेश्वरी, नित्या, शाश्वती १० परमाक्षरा, अचिन्त्या, केवला, अनंता, शिवात्मा, परमात्मिका ॥ १८ ॥

अनादिरव्ययाशुद्धादेवात्मा २०सर्वगोचरा ॥
एकानेकविभागस्थामायातीतासुनिर्मला॥१९॥

टीका—अनादि, अव्यया, शुद्धा, देवात्मा २० सर्वगोचरा, एक अनेक विभागमें स्थित, मायासे परे, निर्मल ॥ १९ ॥

महामाहेश्वरीशक्तामहादेवीनिरंजना ॥
काष्ठा ३०सर्वांतरस्थाचचिच्छक्तिरतिलालसा॥

टीका—महामाहेश्वरी, शक्ता, महादेवी, निरंजना, काष्ठा३०सर्वान्तरस्था, चिच्छक्ति, अतिलालसा॥२०॥

जानकीमिथिलानंदाराक्षसांतविधायिनी ॥

रावणांतकरीरम्यारामवक्षःस्थलालया ॥ २१ ॥

टीका—जानकी, मिथिलाके जनोंको आनंदकी-देनेवाली, राक्षसोंका अन्त करनेवाली, रावणका अंत करनेवाली, मनोहर रामके वक्षस्थलमें विहार करनेवा-ली ॥ २१ ॥

उमासर्वात्मिका४०विद्याज्योतीरूपाऽयुताक्षरी॥
शांतिःप्रतिष्ठासर्वेषांनिवृत्तिरमृतप्रदा ॥ २२ ॥

टीका—उमा, सर्वात्मिका ४० विद्या, ज्योतीरूपा, अयुताक्षरी, शान्ति, सबकी प्रतिष्ठा, निवृत्ति, अमृ-तकी देनेवाली ॥ २२ ॥

व्योममूर्तिर्व्योममयीव्योमाधारा५०ऽच्युतालता॥
अनादिनिधनायोषाकारणात्माकलाकुला ॥२३॥

टीका—व्योममूर्ति, व्योममयी, व्योमाधारा ५० अच्युता, लता, आदिअन्तरहित, योषा, कारणात्मा, कलाकुला ॥ २३ ॥

नंदप्रथमजानाभिरमृतस्यांतसंश्रया ॥
प्राणेश्वराप्रिया६०मातामहीमहिषवाहना॥२४॥

टीका—नंदके यहां प्रथम उत्पन्न होनेवाली, नाभिमें अमृतके आश्रयवाली, प्राणेश्वरप्रिया ६० मातामही, महिषवाहनवाली ॥ २४ ॥

प्राणेश्वरीप्राणरूपाप्रधानपुरुषेश्वरी ॥ सर्वशक्तिः
कलाकाष्ठाज्योत्स्नेंदो७० र्महिमास्पदा ॥ २५ ॥

टीका—प्राणेश्वरी, प्राणरूपा, प्रधानपुरुषेश्वरी, सर्वशक्ति, कला, काष्ठा, चन्द्रमाकी ज्योत्स्ना ७० महिमाके स्थानवाली ॥ २५ ॥

सर्वकार्यनियंत्रीचसर्वभूतेश्वरेश्वरी ॥
अनादिरव्यक्तगुणामहानन्दासनातनी ॥ २६ ॥

टीका—सर्व कार्यकी नियन्त्री, सर्वभूतेश्वरोंकी ईश्वरी, अनादि, अव्यक्तगुणा, महानंदा, सनातनी ॥ २६ ॥

आकाशयोनिर्योगस्थासर्वयोगेश्वरेश्वरी ॥८०॥
शवासना॥चितांतःस्थामहेशीवृषवाहना ॥ २७ ॥

टीका—आकाशसे उत्पन्न होनेवाली, योगमें स्थित, सर्व योगेश्वरोंकी ईश्वरी ८० शवासना, चिताके मध्यमें स्थित, महेशी, वृषवाहनवाली ॥ २७ ॥

बालिकातरुणीवृद्धावृद्धमाताजरातुरा ॥
महामाया९०सुदुष्पूरामूलप्रकृतिरीश्वरी ॥२८॥
टीका—बालिका, तरुणी, वृद्धा, वृद्धमाता, जरासे आतुर, महामाया९०सुदुष्पूरा, मूलप्रकृति,ईश्वरी ॥२८॥

संसारयोनिःसकलासर्वशक्तिसमुद्भवा ॥ संसारसाराद्ुर्वारादुर्निरीक्ष्यादुरासदा १०० ॥२९॥
टीका—संसारयोनि, सर्वस्वरूप, सबशक्तियोंको उत्पन्न करनेवाली, संसारसारा, दुर्वार, कठिनतासे नेत्रगोचर होनेवाली, दुरासदा ॥ २९ ॥

प्राणशक्तिःप्राणविद्यायोगिनीपरमाकला ॥
महाविभूतिर्दुर्धर्षामूलप्रकृतिसम्भवा ॥ ३० ॥
टीका—प्राणशक्ति, प्राणविद्या, योगिनी, परमाकला, महाविभूति, दुर्धर्षा, मूलप्रकृतिसे उत्पन्न होनेवाली॥ ३०॥

अनाद्यनन्तविभवापरात्मापुरुषोबली ११० ॥
सर्गस्थित्यंतकरणीसुदुर्वाच्यादुरत्यया ॥३१॥
टीका—अनादि अनन्त ऐश्वर्यवाली, परात्मा, पुरुष,

बली ११० सृष्टिकी स्थिति और अन्त करनेवाली,कह-
नेमें न आनेवाली, दुरत्यया ॥ ३१ ॥

शब्दयोनिःशब्दमयीनादाख्यानादविग्रहा ॥
प्रधानपुरुषातीताप्रधानपुरुषात्मिका ॥ ३२ ॥

टीका—शब्दसे उत्पन्न होनेवाली शब्दमयी, नादना-
मवाली, तथा नादविग्रहवाली, प्रधानपुरुषसे परे, प्रधान-
पुरुषात्मिका ॥ ३२ ॥

पुराणी १२० चिन्मयीपुंसामादिःपुरुषरूपिणी ॥
भूतांतरात्माकूटस्थामहापुरुषसंज्ञिता ॥ ३३ ॥

टीका—पुराणी १२० चिन्मयी, पुरुषोंमें आदि
पुरुषके रूपवाली, भूतांतरात्मा, कूटस्था, महापुरुष-
नामवाली ॥ ३३ ॥

जन्ममृत्युजरातीतासर्वशक्तिसमन्विता ॥ व्या-
पिनीचानवच्छिन्ना १३० प्रधानासुप्रवेशिनी ३४

टीका—जन्म मृत्यु जरासे परे, सब शक्तिसे संयुक्त,
व्यापिनी, अनवच्छिन्ना १३० प्रधानमें प्रवेश
करनेवाली ॥ ३४ ॥

क्षेत्रज्ञाशक्तिरव्यक्तलक्षणामलवर्जिता॥ अनादि-
मायासंभिन्नात्रितत्त्वाप्रकृतिर्गुणः १४० ॥३५॥

टीका—क्षेत्रकी जाननेवाली, शक्ति, अव्यक्तलक्षणा मलसे वर्जित, अनादिमायासे संभिन्न, त्रितत्त्वा, प्रकृति, गुणस्वरूप १४० ॥ ३५ ॥

महामायासमुत्पन्नातामसीपौरुषंध्रुवा ॥
व्यक्ताव्यक्तात्मिकाकृष्णरक्ताशुक्लाप्रसूतिका ३६

टीका—महामायासे समुत्पन्न, तामसी, ध्रुव पुरुषार्थवाली, व्यक्तअव्यक्तात्मिका, कृष्णरक्तशुक्लप्रसूतिका ॥ ३६ ॥

स्वकार्या १५० कार्यजननीब्रह्मास्याब्रह्मसंश्रया ॥
व्यक्ताप्रथमजाब्राह्मीमहतीज्ञानरूपिणी ॥३७॥

टीका—स्वकार्या १५० कार्यकी जननी, ब्रह्मके आश्रयभूत (ब्रह्मसंश्रयवाली,) प्रगट, प्रथम उत्पन्न होनेवाली, ब्राह्मी, महती, ज्ञानरूपिणी ॥ ३७ ॥

वैराग्यैश्वर्यधर्मात्माब्रह्ममूर्ति १६० र्हृदिस्थिता ॥
जयदाजित्वरीजैत्रीजयश्रीर्जयशालिनी ॥३८॥

टीका—वैराग्य ऐश्वर्य धर्मात्मा, ब्रह्ममूर्ति १६० हृदयमें स्थित, जयदाता, शीघ्र जीतनेवाली, जैत्री, जयलक्ष्मी, जययुक्त ॥ ३८ ॥

सुखदाशुभदासत्याशुभा १७० संक्षोभकारिणी॥
अपांयोनिःस्वयंभूतिर्मानसीतत्त्वसंभवा ॥ ३९ ॥

टीका—सुखदायक, शुभदायक, शुभा १७० संक्षोभ करनेवाली, जलोंकी योनि, स्वयंभूति, मानसी, तत्त्वसंभवा ॥ ३९ ॥

ईश्वराणीचशर्वाणीशंकरार्द्धशरीरिणी ॥ भवानी
चैवरुद्राणी १८० महालक्ष्मीरथांबिका ॥ ४० ॥

टीका—ईश्वराणी, शर्वाणी, शंकरके अर्द्धशरीरवाली, भवानी, रुद्राणी १८० महालक्ष्मी, अम्बिका ॥ ४० ॥

माहेश्वरीसमुत्पन्नाभुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥
सर्वेश्वरीसर्ववर्णानित्यामुदितमानसा ॥ ४१ ॥

टीका—माहेश्वरी, प्रगट होनेवाली, भुक्ति मुक्तिका फल देनेवाली, सर्वेश्वरी, सबवर्णयुक्त, नित्या, मुदित मनवाली ॥ ४१ ॥

ब्रह्मेंद्रोपेंद्रनमिताशंकरेच्छानुवर्तिनी १९० ॥
ईश्वरार्द्धासनगतारघूत्तमपतिव्रता ॥ ४२ ॥

टीका–ब्रह्मा इन्द्र उपेन्द्रसे नमित, शंकरकी इच्छासे वर्तनेवाली १९० ईश्वरके अर्धआसनमें प्राप्त, रघुश्रेष्ठकी पतिव्रता ॥ ४२ ॥

सकृद्विभाविता सर्वा समुद्रपरिशोषिणी ॥
पार्वतीहिमवत्पुत्रीपरमानन्ददायिनी ॥ ४३ ॥

टीका–एकही बार सबकी भावना करनेवाली, समुद्रकी शोषनेवाली, पार्वती, हिमालयकी पुत्री, परमानंद देनेवाली ॥ ४३ ॥

गुणाढ्यायोगदा२००योग्याज्ञानमूर्तिविकाशिनी॥
सावित्रीकमलालक्ष्मीःश्रीरनंतोरसि स्थिता:४४॥

टीका–गुणोंमें श्रेष्ठ, योगदायक २०० योग्या, ज्ञानमूर्तिका विकाशकरनेवाली, सावित्री, कमला, लक्ष्मी, श्री, अनन्तके हृदयमें स्थित ॥ ४४ ॥

सरोजनिलयाशुभ्रायोगनिद्रा २१० सुदर्शना ॥
सरस्वतीसर्वविद्याजगज्ज्येष्ठासुमंगला ॥४५॥

टीका—कमलके स्थानवाली, शुभ्र, योगनिद्रा२१०
सुदर्शना, सरस्वती, सर्वविद्या, जगज्ज्येष्ठा, सुमंगला ४५

वासवीवरदावाच्याकीर्तिःसर्वार्थसाधिका२२०॥
वागीश्वरीसर्वविद्यामहाविद्यासुशोभना ॥४६॥

टीका—वासवी,वरदेनेवाली,वाच्या, सब अर्थ साधनेवाली
२२० वागीश्वरी, सर्वाविद्या, महाविद्या, सुशोभना ४६॥

गुह्यविद्यात्मविद्याचसर्वविद्यात्मभाविता ॥
स्वाहाविश्वंभरी २३० सिद्धिःस्वधामेधाधृतिः
श्रुतिः ॥ ४७ ॥

टीका—गुह्यविद्या, आत्मविद्या, सर्वविद्यां, आत्मभा-
विता, स्वाहा, विश्वम्भरी २३० सिद्धि, स्वधा, मेधा,
धृति, श्रुति ॥ ४७ ॥

नाभिःसुनाभिःसुकृतिर्माधवीनरवाहिनी२४०॥
पूज्याविभावरीसौम्याभगिनीभोगदायिनी ॥४८

टीका—नाभि,सुनाभि,सुकृति,माधवी,नरवाहिनी२४०
पूज्या, विभावरी, सौम्या, भगिनी, भोग देनेवाली४८॥

शोभावंशकरीलीलामानिनीपरमेष्ठिनी २५० ॥
त्रैलोक्यसुंदरीरम्यासुंदरीकामचारिणी ॥ ४९ ॥
टीका–शोभा, वंशकरी, लीला, मानिनी, परमेष्ठिनी, २५० त्रैलोक्यसुन्दरी,रम्या,सुन्दरी, कामचारिणी४९॥

महानुभावमध्यस्थामहामाहिषमर्दिनी ॥
पद्ममालापापहराविचित्रमुकुटानना ॥ ५० ॥
टीका–महानुभावके मध्यमें स्थित होनेवाली, महामहिषकी मारनेवाली, पद्ममाला, पापकी हरनेवाली, विचित्र मुकुट मुखवाली ॥ ५० ॥

कांता२६०चित्राम्बरधरादिव्याभरणभूषिता ॥
हंसाख्याव्योमनिलयाजगत्सृष्टिविवर्द्धिनी५१ ॥
टीका–कान्ता २६० चित्र अम्बर धारण करनेवाली, हंसनामक, आकाशमें स्थानवाली, जगत्की सृष्टि बढानेवाली ॥ ५१ ॥

निर्यंत्रामन्त्रवाहस्थानंदिनीभद्रकालिका ॥
आदित्यवर्णा२७०कौमारीमयूरवरवाहिनी ५२॥
टीका–निर्यंत्रा, मंत्रपाठियोंमें स्थित, नंदिनी,

भद्रकालिका, आदित्यवर्णा २७० कौमारी श्रेष्ठ मोरपर चढनेवाली ॥ ५२ ॥

वृषासनगतागौरीमहाकालीसुरार्चिता ॥ अदितिर्नियतारौद्रीपद्मगर्भा २८० विवाहना ॥५३॥

टीका–वृषके आसनपर स्थित, गौरी, महाकाली, देवताओंसे अर्चित, अदिति, नियता, रौद्री, पद्मगर्भा २८० विवाहना ॥ ५३ ॥

विरूपाक्षीलेलिहानामहासुरविनाशिनी ॥

महाफलानवद्यांगीकामपूराविभावरी ॥ ५४ ॥

टीका–विरूपाक्षी जिह्वासे होठ चाटनेवाली, महाअसुरोंकी नाश करनेवाली, महाफला, निन्दारहित अङ्गवाली, कामपूरा, विभावरी ॥५४॥

विचित्ररत्नमुकुटाप्रणतर्द्धिविवर्द्धिनी२९० ॥ कौशिकीकर्पिणीरात्रिस्त्रिदशार्त्तिविनाशिनी ॥ ५५ ॥

टीका–विचित्र रत्नोंके मुकुटवाली, भक्तोंकी ऋद्धि बढानेवाली, कौशिकी, कर्पिणी, रात्रि, देवताओंके दुःख नाश करनेवाली ॥ ५५ ॥

विरूपाचसुरूपाचभीमामोक्षप्रदायिनी ॥ भक्ता
र्त्तिनाशिनीभव्या ३००भवभावविनाशिनी५६
टीका–विरूपा,सुरूपा,भीमा, मोक्षदाता,भक्तोंके दुःख-
नाशक, भव्या ३०० भवभावविनाशिनी ॥ ५६ ॥

निर्गुणानित्यविभवानिःसारानिरपत्रपा ॥
यशस्विनीसामगीतिर्भवांगनिलयालया ॥५७॥
टीका–निर्गुणा,नित्यविभववाली, निःसारा,निरपत्रपा
(लज्जारहित) यशस्विनी, सामगीति, भवांगनिलया-
लया ॥ ५७ ॥

दीक्षा३१० विद्याधरीदीप्तामहेंद्रविनिपातिनी ॥
सर्वातिशायिनीविद्यासर्वशक्तिप्रदायिनी ॥५८॥
टीका-दीक्षा ३१० विद्याधरी, दीप्ता, महेन्द्रवि-
निपातिनी, सबसे अधिक, विद्या, सब शक्तिकी
देनेवाली ॥ ५८ ॥

सर्वेश्वरप्रियातार्क्षीसमुद्रांतरवासिनी ॥ अकलं-
कानिराधारा३२०नित्यासिद्धानिरामया ॥५९॥
टीका–सर्वेश्वरकी प्रिया, तार्क्षी, समुद्रके अन्तरमें

निवास करनेवाली, कलंकरहित, निराधारा ३२० नित्यसिद्धा, निरामया ॥ ५९ ॥

कामधेनुर्वेदगर्भाधीमतीमोहनाशिनी ॥ निःसं-
कल्पानिरातंकाविनयाविनयप्रदा३३० ॥६०॥

टीका—कामधेनु, वेदगर्भा, धीमती, मोहनाशिनी, निःसंकल्पा, निरातंका, विनयप्रदा ३३० ॥ ६० ॥

ज्वालामालासहस्राढ्यादेवदेवीमनोन्मनी ॥
उर्वीगुर्वीगुरुःश्रेष्ठासगुणाषड्गुणात्मिका॥६१॥

टीका—ज्वालामालासहस्राढ्या, देवदेवी, मनोन्मनी, उर्वी, गुर्वी, गुरु, श्रेष्ठा, षड्गुणात्मिका ॥ ६१ ॥

महाभगवती ३४० भव्यावसुदेवसमुद्भवा ॥
महेंद्रोपेंद्रभगिनीभक्तिगम्यपरायणा ॥ ६२ ॥

टीका—महाभगवती ३४० भव्या, वसुदेवसमुद्भवा, महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी, भक्तिगम्यपरायणा ॥ ६२ ॥

ज्ञानज्ञेयाजरातीतावेदांतविषयागतिः ॥
दक्षिणा३५०दहनाबाह्यासर्वभूतनमस्कृता॥६३॥

टीका—ज्ञानज्ञेया, जरातीता, वेदान्तविषयागति,

दक्षिणा, ३५०दहना,बाह्या,सर्वभूतसे नमस्कृत ॥६३॥

योगमायाविभावज्ञामहामोहामहीयसी ॥
सत्यासर्वसमुद्भूतिर्ब्रह्मवृक्षाश्रया३६०मतिः६४॥

टीका–योगमायाका विभाव जाननेवाली, सत्या, सबकी उत्पन्न करनेवाली, ब्रह्मवृक्षकी आश्रय करनेवाली, मति ॥ ६४ ॥

बीजांकुरसमुद्भूतिर्महाशक्तिर्महामतिः ॥
ख्यातिःप्रतिज्ञाचित्संविन्महायोगेंद्रशायिनी ६५

टीका–बीज अंकुरकी उत्पत्तिका कारण, महाशक्ति, महामति, ख्याति, प्रतिज्ञा, चित्संवित्, महायोगेन्द्र शायिनी ॥ ६५ ॥

विकृतिः ३७०शांकरीशास्त्रीगंधर्वयक्षसेविता ॥
वैश्वानरीमहाशालादेवसेनागुहप्रिया ॥ ६६ ॥

टीका–विकृति, ३७०शांकरी, शास्त्री, गन्धर्व यक्षसे सेवित, वैश्वानरी, महाशाला, देवसेना, गुहप्रिया ॥६६॥

महारात्रीशिवानंदाशची३८०दुःस्वप्ननाशिनी ॥
पूज्याऽपूज्याजगद्धात्रीदुर्विज्ञेयस्वरूपिणी ६७॥

टीका—महारात्री, शिवानंदा, शची ३८० दुःस्वप्न-नाशिनी, पूज्या, अपूज्या, जगद्धात्री, दुर्विज्ञेयस्वरूपिणी ॥ ६७ ॥

गुहांबिकागुहोत्पत्तिर्महापीठामरुत्सुता ॥
हव्यवाहांतरा३९० गार्गीहव्यवाहसमुद्भवा ६८॥

टीका—गुहाम्बिका, गुहोत्पत्ति, महापीठा, मरुत्सुता, हव्यवाहान्तरा, ३९० गार्गी, हव्यवाहसमुद्भवा ॥६८॥

जगद्योनिर्जगन्माताजगन्मृत्युर्जरातिगा ॥
बुद्धिर्माताबुद्धिमतीपुरुषांतरवासिनी ४००॥६९

टीका—जगत्की योनि, जगत्की माता, जगत्की मृत्यु और जराका अतिक्रमण करनेवाली, बुद्धि, माता, बुद्धिमती, पुरुषान्तरवासिनी ४०० ॥ ६९ ॥

तपास्विनीसमाधिस्थात्रिनेत्रादिविसांस्थिता ॥
सर्वेंद्रियमनोमातासर्वभूतहृदिस्थिता ॥ ७० ॥

टीका—तपस्विनी, समाधिमें स्थित, त्रिनेत्रा, स्वर्गमें स्थित, सम्पूर्ण इन्द्रिय और मनकी माता, सब भूतोंके हृदयमें स्थित ॥ ७० ॥

संसारतारिणीविद्याब्रह्मवादिमनोलया ॥
ब्रह्माणीबृहती४१०ब्राह्मीब्रह्मभूताभयावनिः ७१

टीका—संसारसे तारनेवाली, विद्या, ब्रह्मवादिनी, मनोलया, ब्रह्माणी, बृहती ४१० ब्राह्मी, ब्रह्मभूता, भयावनि ॥ ७१ ॥

हिरण्मयीमहारात्रिःसंसारपरिवर्तिका ॥ सुमा
लिनीसुरूपाचतारिणीभाविनी४२०प्रभा॥७२॥

टीका—हिरण्मयी, महारात्रि, संसारका परिवर्तन करनेवाली, सुमालिनी, सुरूपा, तारिणी, भाविनी ४२० प्रभा ॥ ७२ ॥

उन्मीलनीसर्वसहासर्वप्रत्ययसाक्षिणी ॥ तपिनी
तापिनीविश्वाभोगदाधारिणीधरा ४३० ॥७३॥

टीका—उन्मीलनी, सर्वसहा, सबप्रत्ययकी साक्षिणी, तपिनी, तापिनी, विश्वा, भोगदा, धारिणी, धरा ४३०

सुसौम्याचंद्रवदनाताण्डवासक्तमानसा ॥
सत्त्वशुद्धिकरीशुद्धिमलत्रयविनाशिनी ॥ ७४ ॥

टीका–सुसौम्या, चन्द्रवदना, तांडवमें प्रसन्न मनवाली, सत्त्वशुद्धिकरी, शुद्धि, तीनों मलका नाश करनेवाली ॥ ७४ ॥

जगत्प्रियाजगन्मूर्तिस्त्रिमूर्तिरमृताश्रया ४४० ॥
निराश्रयानिराहारानिरंकुशरणोद्भवा ॥ ७५ ॥

टीका–जगत्प्रिया, जगत्की मूर्ति, त्रिमूर्ति, अमृताश्रया ४४० निराश्रया, निराहारा, निरंकुशा, रणोद्भवा ॥ ७५ ॥

चक्रहस्ताविचित्रांगीस्रग्विणीपद्मधारिणी ॥
परापरविधानज्ञामहापुरुषपूर्वजा ॥ ७६ ॥

टीका–चक्रहस्ता विचित्रांगी, स्रग्विणी, पद्मधा-रिणी, परा, परविधानके जाननेवाली, महापुरुषोंसे भी पूर्व होनेवाली ॥ ७६ ॥

विद्येश्वरप्रिया४५०ऽविद्याविद्युज्जिह्वाजितश्रमा॥
विद्यामयीसहस्राक्षीसहस्रश्रवणात्मजा ॥ ७७॥

टीका–विद्येश्वरप्रिया ४५० अविद्या, विद्युज्जिह्वा, श्रमरहित, विद्यामयी, सहस्राक्षी, सहस्रश्रवणकीआत्मजा॥

सहस्त्ररश्मिपद्मस्थामहेश्वरपदाश्रया॥ज्वालिनी
४६०सद्मनाव्याप्तातैजसीपद्मरोधिका ॥ ७८ ॥

टीका—सहस्त्ररश्मिपद्मस्था, महेश्वरपदाश्रया, ज्वालिनी ४६० सद्म करके व्याप्त, तैजसी, पद्मरोधिका ॥ ७८ ॥

महादेवाश्रयामान्यामहादेवमनोरमा ॥ व्योम-
लक्ष्मीःसिंहरथाचेकितान्यमितप्रभा४७० ॥७९॥

टीका—महादेवके आश्रयवाली, मान्या, महादेवके मनको रमानेवाली, व्योमलक्ष्मी, सिंहरथा, चेकितानी, अमितप्रभा ४७० ॥ ७९ ॥

विश्वेश्वरीविमानस्थाविशोकाशोकनाशिनी ॥
अनाहताकुंडलिनीनलिनीपद्मवासिनी ॥८०॥

टीका—विश्वकी स्वामिनी, विमानमें स्थित, विशोका, शोकनाशिनी, अनाहता, कुंडलिनी, नलिनी, पद्मवासिनी ॥ ८० ॥

शतानंदासतांकीर्तिः४८०सर्वभूताशयास्थिता ॥
वाग्देवताब्रह्मकलाकलातीताकलावती ॥८१॥

टीका—शतानंदा, सत्पुरुषोंकी कीर्ति ४८० सब भूतोंके आशयमें स्थित, वाग्देवता, ब्रह्मकला, कलातीता, कलावती ॥ ८१ ॥

ब्रह्मर्षिर्ब्रह्महृदयाब्रह्मविष्णुशिवाप्रिया ॥ व्योमशक्तिःक्रियाशक्ति४९०र्जनशक्तिःपरागतिः८२।

टीका—ब्रह्मर्षि, ब्रह्महृदया, ब्रह्मा विष्णु शिवकी प्यारी, व्योमशक्ति, क्रियाशक्ति ४९० जनशक्ति, परागति ॥ ८२ ॥

क्षोभिकारौद्रिकाभेद्याभेदाभेदविवर्जिता ॥ अभिन्नाभिन्नसंस्थानावंशिनीवंशहारिणी५००॥८३॥

टीका—क्षोभिका, रौद्रिका, भेद्या, भेदअभेदसे वर्जित, अभिन्न, भिन्नसंस्थानवाली, वंशिनी, वंशहारिणी ५०० ॥ ८३ ॥

गुह्यशक्तिर्गुणातीतासर्वदासर्वतोमुखी ॥
भगिनीभगवत्पत्नीसकलाकालकारिणी ॥८४॥

टीका—गुह्यशक्ति, गुणातीता, सर्वदा, सर्वतोमुखी, भगिनी, भगवत्पत्नी, सकला, कालकारिणी ॥ ८४ ॥

सर्ववित्सर्वतोभद्रा ५१० गुह्यातीतागुहावलिः ॥
प्रक्रियायोगमाताचगंधाविश्वेश्वरेश्वरी ॥ ८५ ॥

टीका—सबकी जाननेवाली, सब ओरसे मंगल-दायक ५१० गुह्यसे अतीत, गुहावलि, प्रक्रिया, योग-माता, गंधा, विश्वेश्वरेश्वरी ॥ ८५ ॥

कपिलाकपिलाकांताकनकाभाकलांतरा ५२०॥
पुण्यापुष्करिणीभोक्त्रीपुरंदरपुरःसरा ॥ ८६ ॥

टीका—कपिला, कपिलाकान्ता, कनकाभा, कला-न्तरा ५२० पुण्या, पुष्करिणी, भोक्त्री, पुरन्दर-पुरस्सरा ॥ ८६ ॥

पोषणीपरमैश्वर्यभूतिदाभूतिभूषणा ॥
पंचब्रह्मसमुत्पत्तिः परमात्मात्मविग्रहा ॥८७॥

टीका—पोषणी, परमैश्वर्यविभूतिकी देनेवाली, भूषणा, पंच ब्रह्मसे उत्पन्न होनेवाली, परमात्मा, आत्मविग्रहा ॥ ८७ ॥

नर्मोदया ५३० भानुमतीयोगिज्ञेयामनोजवा॥
बीजरूपारजोरूपावाशिनीयोगरूपिणी ॥८८॥

टीका—नर्मोदया५३०भानुमती,योगिज्ञेया,मनोजवा, बीजरूपा, रजोरूपा, वशिनी, योगरूपिणी ॥ ८८ ॥

सुमंत्रामंत्रिणीपूर्णा ५४० ह्लादिनीक्लेशनाशिनी॥
मनोहरीमनोरक्षीतापसीवेदरूपिणी ॥ ८९ ॥

टीका—सुमंत्रा, मंत्रिणी, पूर्णा ५४० ल्हादिनी, क्लेशनाशिनी, मनोरक्षी, तापसी, वेदरूपिणी ॥ ८९ ॥

वेदशक्तिर्वेदमातावेदविद्याप्रकाशिनी ॥ योगे-
श्वरेश्वरी५५० मालामहाशक्तिर्मनोमयी॥९०॥

टीका—वेदशक्ति, वेदमाता, वेदविद्याकी प्रकाश करनेवाली, योगेश्वरोंकी ईश्वरी ५५० माला, महाशक्ति, मनोमयी ॥ ९० ॥

विश्वावस्थावीरमुक्तिर्विद्युन्मालाविहायसी ॥
पीवरीसुरभीवंद्या५६०नंदिनीनंदवल्लभा ॥९१॥

टीका—विश्वावस्था, वीरमुक्ति, विद्युन्माला, विहा-यसी, पीवरी,सुरभीवन्द्या५६०नंदिनी, नंदवल्लभा॥९१॥

भारतीपरमानन्दापरापरविभेदिका ॥
सर्वप्रहरणोपेताकाम्याकामेश्वरेश्वरी ॥ ९२ ॥

टीका—भारती, परमानन्दा, पर अपरके भेदवाली, सब प्रहरणोंसे युक्त, काम्या, कामेश्वरेश्वरी ॥ ९२ ॥

अचिंत्याऽचिंत्यमहिमा५७०दुर्लेखाकनकप्रभा ॥
कूष्मांडीधनरत्नाढ्यासुगन्धागन्धदायिनी ९३॥

टीका—अचिन्त्या, अचिन्त्यमहिमा ५७० दुर्लेखा, कनकप्रभा, कुष्माण्डी, धनरत्नोंसे युक्त, सुगन्धा, गन्धदायिनी ॥ ९३ ॥

त्रिविक्रमपदोद्भूताधनुष्पाणिःशिरोहया ॥ सुदु-
र्लभा५८०धनाध्यक्षाधन्यापिंगललोचना ॥९४॥

टीका—त्रिविक्रमके पदसे उद्भूत, धनुष्पाणि, शिरोहया, सुदुर्लभा,५८०धनाध्यक्षा, धन्या, पिंगललोचना॥९४॥

भ्रांतिःप्रभावतीदीप्तिः पंकजायतलोचना॥आद्या-
हृत्कमलोद्भूतापरामाता५९०रणप्रिया ॥ ९५ ॥

टीका—भ्रान्ति, प्रभावती, दीप्ति, पंकजायतलोचना, आद्याके,हृदयकमलसे उत्पन्न,परामाता५९०रणप्रिया ९५

सत्क्रियागिरिजानित्यशुद्धापुष्पनिरंतरा ॥ दुर्गा
कात्यायनीचंडीचर्चिकाशांतविग्रहा ६००॥९६॥

टीका-सत्क्रिया, गिरिजा, नित्यशुद्धा, पुष्पनिरं-तरा, दुर्गा, कात्यायनी, चण्डी, चर्चिका, शांत-विग्रहा ६०० ॥ ९६ ॥

हिरण्यवर्णारजनीजगन्मंत्रप्रवर्तिका ॥
मंदराद्रिनिवासाचशारदास्वर्णमालिनी ॥९७॥

टीका-हिरण्यवर्णवाली, रजनी, जगत्के मंत्र प्रवृत्त करनेवाली, मंदर पर्वतपर निवास करनेवाली, शारदा, स्वर्णमालिनी ॥ ९७ ॥

रत्नमालारत्नगर्भापृथ्वीविश्वप्रमाथिनी ६१० ॥
पद्मासनापद्मनिभानित्यतुष्टाऽमृतोद्भवा ॥ ९८ ॥

टीका-रत्नमाला, रत्नगर्भा, पृथ्वी, विश्वप्रमाथिनी, ६१०पद्मासना, पद्मनिभा,नित्यतुष्टा,अमृतोद्भवा ॥९८॥

धुन्वतीदुष्प्रकंपाचसूर्यमाताहषद्वती ॥
महेंद्रभगिनीमाया६२०वरेण्यावरदर्पिता॥९९॥

टीका-धुन्वती, दुष्प्रकंपा, सूर्यमाता, दृषद्वती, महेन्द्रभगिनी, माया६२०वरेण्या, वरसे दर्पिता ॥९९॥

कल्याणीकमलारामापञ्चभूतवरप्रदा ॥ वाच्याव-

रेश्वरीनन्द्यादुर्जया६३०दुरतिक्रमा ॥ १०० ॥

टीका—कल्याणी, कमला, रामा, पञ्चभूतोंको वरकी देनेवाली, वाच्या, वरेश्वरी, नन्द्या, दुर्जया ६३० दुरतिक्रमा ॥ १०० ॥

कालरात्रिर्महावेगावीरभद्रहितप्रिया ॥
भद्रकालीजगन्माताभक्तानांभद्रदायिनी१०१॥

टीका—कालरात्रि, महावेगा, वीरभद्रहितप्रिया, भद्रकाली, जगत्की माता, भक्तोंको आनंद देनेवाली ॥ १०१ ॥

करालापिंगलाकारानामवेदा ६४० महानदा ॥
तपस्विनीयशोदाचयथाध्वपरिवर्तिनी ॥१०२॥

टीका—कराला, पिंगलाकारवाली, नामवेदा ६४० महानदा, तपस्विनी, यशोदा, यथाध्वपरिवर्तिनी १०२॥

शंखिनीपद्मिनीसांख्यासांख्ययोगप्रवर्तिका ।
चैत्रीसंवत्सरा६५०रुद्राजगत्संपूरणींद्रजा ॥१०३॥

टीका—शंखिनी, पद्मिनी, सांख्या, सांख्ययोगकी

प्रवृत्त करनेवाली, चैत्री, संवत्सरा ६५० रुद्रा, जगत्संपूरणी, इन्द्रजा ॥ १०३ ॥

शुभारिःखेचरीखस्थाकंबुग्रीवाकलिप्रिया ॥ खर-
ध्वजाखरारूढा६६०पराध्यर्यापरमालिनी ॥१०४॥

टीका—शुंभारि, खेचरी, आकाशमें स्थित होनेवाली, कम्बुग्रीवा, कलिप्रिया, खरध्वजा, खरारूढा ६६० पराध्यर्या, परमालिनी ॥ १०४ ॥

ऐश्वर्यरत्ननिलयाविरक्तागरुडासना ॥
जयंतीहृद्गुहारम्यासत्ववेगागणाग्रणीः ॥१०५॥

टीका—ऐश्वर्यरत्नके स्थानवाली, विरक्ता, गरुडके आसनवाली, जयन्ती, हृद्गुहारम्या, सत्वके वेगवाली, गणोंमें अग्रणी ॥ १०५ ॥

संकल्पसिद्धा६७०साम्यस्थासर्वविज्ञानदायिनी॥
कलिकल्मषहंत्रीचगुह्योपनिषदुत्तमा ॥ १०६ ॥

टीका—संकल्पसिद्धा ६७० साम्यमें स्थित, सब विज्ञानकी देनेवाली, कलिकल्मषकी नाश करनेवाली, गुह्योपनिषद्रूप, उत्तमा ॥ १०६ ॥

नित्यहृष्टिःस्मृतिर्व्याप्तिःपुष्टिस्तुष्टिः ६८०
क्रियावती ॥ विश्वामरेश्वरेशानाभुक्तिर्मुक्तिः
शिवामृता ॥ १०७ ॥

टीका—नित्यहृष्टि, स्मृति, व्याप्ति, पुष्टि, तुष्टि ६८० क्रियावती, विश्वा, अमरपतियोंकी ईश्वरी, भुक्ति, मुक्ति, शिवा, अमृता ॥ १०७ ॥

लोहितासर्वमाताचभीषणावनमालिनी ६९०॥
अनन्तशयनाऽनाद्यानरनारायणोद्भवा ॥१०८॥

टीका—लोहिता, सर्वमाता, भीषणा, वनमालिनी ६९० अनन्तशयना, अनाद्या,नरनारायणोद्भवा १०८॥

नृसिंहीदैत्यमथिनीशंखचक्रगदाधरा ॥
संकर्षणसमुत्पत्तिरंबिकोपांतसंश्रया ॥ १०९ ॥

टीका—नृसिंही, दैत्यमथनी, शंखचक्र गदाधारिणी, संकर्षणसमुत्पत्ति, अम्बिकासमीपमें निवास करनेवाली ॥ १०९ ॥

महाज्वालामहामूर्तिः७००सुमूर्तिःसर्वकामधुक्॥
सुप्रभासुतरांगौरीधर्मकामार्थमोक्षदा ॥११०॥

टीका—महाज्वाला, महामूर्ति, ७०० सुमूर्ति, सब काम देनेवाली, सुप्रभा, अत्यन्त गौरी, धर्म काम अर्थ मोक्षकी देनेवाली ॥ ११० ॥

भ्रूमध्यनिलयाऽपूर्वाप्रधानपुरुषाबली॥महाविभूतिदा ७१०मध्यासरोजनयनासना ॥ १११॥

टीका—भौंके मध्यमें स्थानवाली, अपूर्वा, प्रधान-पुरुषा, बली, महाविभूतिकी देनेवाली ७१० मध्या, कमलनेत्रासना ॥ १११ ॥

अष्टादशभुजानाट्यानीलोत्पलदलप्रभा ॥
सर्वशक्त्यासमारूढाधर्माधर्मानुवर्जिता ११२॥

टीका—अठारह भुजावाली, नाट्या, नीले कमलकी समान कांतिवाली, सब शक्तिद्वारा समारूढ, धर्म अधर्मसे वर्जित ॥ ११२ ॥

वैराग्यज्ञाननिरतानिरालोका७२०निरिंद्रिया ॥
विचित्रगहनाधीराशाश्वतस्थानवासिनी ११३॥

टीका—वैराग्य ज्ञानमें निरत, निरालोका ७२०

निरिन्द्रिया, विचित्रगहना, धीरजवाली, शाश्वतस्थानमें निवास करनेवाली ॥ ११३ ॥

स्थानेश्वरीनिरानन्दात्रिशूलवरधारिणी ॥
अशेषदेवतामूर्तिर्दैवतापरदेवता ७३० ॥११४॥

टीका—स्थानेश्वरी, निरानंदा, त्रिशूलश्रेष्ठ धारण करनेवाली, सम्पूर्ण देवताओंकी मूर्ति, देवता, परदेवता स्वरूप ७३० ॥ ११४ ॥

गणात्मिकागिरेःपुत्रीनिशुंभाविनिपातिनी ॥
अवर्णावर्णरहितानिर्वर्णाबीजसम्भवा ॥११५॥

टीका—गणात्मिका, पर्वतराजपुत्री, निशुंभकी नाश करनेवाली,अवर्णा,वर्णसेरहित,निर्वाणा,बीजसंभवा ११५॥

अनन्तवर्णाऽनन्यस्थाशंकरी७४०शान्तमानसा
अगोत्रागोमतीगोप्त्रीगुह्यरूपागुणांतरा॥११६॥

टीका—अनन्तवर्णा, अनन्यमें स्थितिवाली, शंकरी ७४० शान्तमनवाली, अगोत्रा, गोमती, रक्षाकरनेवाली, गुह्यरूपा, गुणान्तरा ॥ ११६ ॥

गोश्रीर्गव्यप्रियागौरीगणेश्वरनमस्कृता ॥ सत्य

मात्रा७५०सत्यसन्धात्रिसन्ध्यासंधिवर्जिता११७

टीका—गोश्री,गौके पदार्थ घृत दुग्धकी प्यार करनेवाली,गौरी, गणेश्वरसे नमस्कृत, सत्यमात्रावाली ७५० सत्यसन्धा, तीनों सन्ध्या और संधिसे रहित ॥११७॥

सर्ववादाश्रयासांख्यासांख्ययोगसमुद्भवा॥असंख्येयाऽप्रमेयाख्याशून्याशुद्धकुलोद्भवा७६० ॥

टीका—सर्व वादके आश्रयवाली, सांख्ययुक्त, सांख्ययोग द्वारा प्रगट होनेवाली, अनन्ता, प्रमाके अयोग्य शून्य, शुद्धकुलमें प्रगट होनेवाली ७६० ॥ ११८ ॥

बिंदुनादसमुत्पत्तिःशंभुवामाशशिप्रभा ॥
विसंगाभेदरहितामनोज्ञामधुसूदनी ॥ ११९ ॥

टीका—बिन्दुनादसे प्रगट होनेवाली, शंभुकी वामा, चन्द्रमाकी समान कान्तिवाली, संगवर्जित, भेदरहित, मनोहरा मधुसूदनी ॥ ११९ ॥

महाश्रीःश्रीसमुत्पत्ति७७०स्तमःपारेप्रतिष्ठिता॥
त्रितत्त्वमातात्रिविधासुसूक्ष्मपदसंश्रया ॥१२०॥

टीका—महाश्री, लक्ष्मीकी प्रगट करनेवाली ७७०

तमके परपारमें स्थिति करनेवाली, तीन तत्त्वोंकी माता, त्रिविधा, सूक्ष्मपदमें स्थिति करनेवाली ॥ १२० ॥

शांत्यतीतामलातीतानिर्विकारानिराश्रया ॥
शिवाख्याचित्रनिलया ७८० शिवज्ञानस्वरूपिणी ॥ १२१ ॥

टीका–शान्त्यतीता, मलसे परे, निर्विकार, निराश्रय, शिवा, चित्रनिलया ७८० शिवके ज्ञानकी स्वरूपवाली ॥ १२१ ॥

दैत्यदानवनिर्मात्रीकाश्यपीकालकर्णिका ॥
शास्त्रयोनिःप्रियामूर्तिश्चतुर्वर्गप्रदर्शिता ॥ १२२ ॥

टीका–दैत्यदानवकी निर्माण करनेवाली, काश्यपी, कालकर्णिका, शास्त्रयोनि, क्रियाकी मूर्ति, चार वर्ग (धर्म अर्थ काम मोक्ष) की दिखानेवाली ॥ १२२ ॥

नारायणीनवोद्भूताकौमुदी७९०लिंगधारिणी ॥
कामुकीललितातारापरापरविभूतिदा ॥ १२३ ॥

टीका–नारायणी, नवीन उद्भववाली, कौमुदी७९०

लिंगधारिणी, कामुकी, ललिता, तारा, परापरके ऐश्वर्यकी देनेवाली ॥ १२३ ॥

परांतजातमहिमावडवावामलोचना ॥
सुभद्रादेवकी८००सीतावेदवेदांगपारगा।१२४॥

टीका—महामहिमावाली, वडवा, वामलोचनी, सुभद्रा, देवकी ८०० सीता, वेदवेदांगकी पार जानेवाली ॥ १२४ ॥

मनस्विनीमन्युमातामहामन्युसमुद्भवा ॥
अमृत्युरमृतास्वादापुरुहूतापुरुप्लुता ॥ १२५ ॥

टीका—मनस्विनी, मन्युमाता, महाक्रोधमें होनेवाली, मृत्युरहित, अमृतके आस्वादवाली, पुरुहूता, पुरुप्लुता ॥ १२५ ॥

अशोच्या८१०भिन्नविषयाहिरण्यरजतप्रिया ॥
हिरण्याराजतीहैमीहेमाभरणभूषिता ॥ १२६ ॥

टीका—शोचरहिता ८१० भिन्न विषयवाली, सोने चांदीको प्यार करनेवाली, सुवर्ण चांदी हेमरूपवाली, सुवर्णके गहनोंसे युक्त ॥ १२६ ॥

विभ्राजमानादुर्ज्ञेयाज्योतिष्टोमफलप्रदा ॥ महा-
निद्रा ८२० समुद्भूतिबलींद्रासत्यदेवता १२७॥

टीका—विशेषकर शोभायमान, जाननेमें न आने-वाली, ज्योतिष्टोम यज्ञका फल देनेवाली, महानिद्रा ८२० समुद्भववाली, बलियोंमें श्रेष्ठ, सत्यदेवतायुक्त ॥ १२७॥

दीर्घाककुद्मिनीविद्याशांतिदाशांतिवर्द्धिनी ॥
लक्ष्म्यादिशक्तिजननीशक्तिचक्रप्रवर्तिका १२८

टीका—दीर्घा, ककुद्मिनी, विद्या, शान्तिदेनेवाली, शान्तिकी बढानेवाली, लक्ष्मीआदि शक्तिकी उत्पन्न करनेवाली, शक्तिचक्रके प्रवृत्त करनेवाली ॥ १२८ ॥

त्रिशक्तिजननी ८३० जन्यापडूर्मिपरिवर्जिता॥
स्वाहाचकर्मकरणीयुगांतदलनात्मिका॥१२९॥

टीका—तीनों शक्तिकी उत्पन्नकरनेवाली ८३० जन्या, यामक्रोधादि छः ऊर्मियोंसे वार्जेत, स्वाहा, कर्मकी करनेवाली, युगान्तदलन करनेवाली ॥ १२९ ॥

संकर्षणाजगद्धात्रीकामयोनिःकिरीटिनी ॥ ऐंद्री
८४० त्रैलोक्यनमितावैष्णवीपरमेश्वरी॥१३०॥

टीका–संकर्षण करनेवाली, जगत्की माता, कामयोनि, किरीट धारण किये, ऐन्द्रीशक्ति ८४० त्रिलोकीसे नमस्कृत, वैष्णवी, परमेश्वरी ॥ १३० ॥

प्रद्युम्नदयितादांतायुग्मदृष्टिस्त्रिलोचना ॥ महोत्कटाहंसगतिःप्रचण्डा८५०चण्डविक्रमा १३१

टीका–प्रद्युम्नप्रिया, दान्ता, युग्मदृष्टिवाली, त्रिलोचना, महाउत्कटा, हंसगामिनी, प्रचण्डा ८५० तीक्ष्णपराक्रमवाली ॥ १३१ ॥

वृषावेपावियन्मात्राविंध्यपर्वतवासिनी ॥
हिमवन्मेरुनिलयाकैलासगिरिवासिनी॥१३२॥

टीका–वृषमें आवेशवाली, आकाशकी मात्रा, विन्ध्यपर्वतमें निवास करनेवाली, हिमालय और मेरुमें निवास करनेवाली, तथा कैलासमें रहनेवाली ॥१३२॥

चाणूरहन्त्रीतनयानीतिज्ञाकामरूपिणी ८६०॥
वेदविद्याव्रतरताधर्मशीलाऽनिलासना ॥१३३॥

टीका–चाणूरकी मारनेवाली, तनया, नीतिकी जानने

वाली, कामरूपिणी ८६० वेदविद्याव्रतमें रत, धर्मशीला, अनिलका भोजन करनेवाली ॥ १३३ ॥

अयोध्यानिलयावीरामहाकालसमुद्भवा ॥
विद्याधरक्रियासिद्धाविद्याधरनिराकृतिः १३४॥

टीका—अयोध्यामें निवास करनेवाली, वीरा, महाकालकी प्रगट करनेवाली, विद्याधरप्रिया, सिद्धा, विद्याधरकी निराकृत करनेवाली ॥ १३४ ॥

आप्यायन्ती८७०वहंतीचपावनीपोषणीखिला।
मातृकामन्मथोद्भूतावारिजावाहनप्रिया॥१३५॥

टीका—तृप्ति करनेवाली ८७० वहन करनेवाली, पावनी, पोषणी, खिला, मातृका, मन्मथसे उद्भूत, जलसे प्रगट होनेवाली, वाहनप्रिया ॥ १३५ ॥

करीषिणीस्वधावाणी८८० वीणावादनतत्परा ॥
सेवितासेविकासेवासिनीवालीगरुत्मती १३६॥

टीका—करीषिणी, स्वधा, वाणी, ८८० वीणाबजानेमें तत्पर, सेवित, सेविका, सेवा, सिनीवाली (अमारूप) गरुत्मती ॥ १३६ ॥

अरुंधतीहिरण्याक्षीमणिदाश्रीवसुप्रदा ८९० ॥
वसुमतीवसोर्धारावसुंधरासमुद्भवा ॥ १३७॥

टीका--अरुंधती, हिरण्याक्षी, मणिदाता, श्री, वसु (धन) की देनेवाली ८९० वसुमती, वसोर्धारा, वसुन्धरासे प्रगट होनेवाली ॥ १३७ ॥

वरारोहावरार्हाचवपुःसङ्गसमुद्भवा ॥ श्रीफली
श्रीमतीश्रीशाश्रीनिवासा९००हरिप्रिया १३८॥

टीका--सुमुखी, श्रेष्ठ योग्यतायुक्त शरीरके संगसे होनेवाली, श्रीफली, श्रीमती, श्रीशा, श्रीनिवासा, ९०० हरिकी प्रिया ॥ १३८ ॥

श्रीधरीश्रीकरीकंप्राश्रीधराईशवीरणी ॥ अनन्त
दृष्टिरक्षुद्राधात्रीशाधनदप्रिया ९१० ॥१३९॥

टीका--श्रीधरी, श्री करनेवाली, कंप्रा, श्री धारण करनेवाली, ईशवीरणी, अनन्तदृष्टि, क्षुद्रतारहित, धात्रीशा, धनदकी प्रिया ९१० ॥ १३९ ॥

निहंत्रीदैत्यसिंहानांसिंहिकासिंहवाहिनी ॥
सुसेनाचन्द्रनिलयासुकीर्तिश्छिन्नसंशया १४०॥

टीका-महादैत्योंकी मारनेवाली, सिंहिकारूप, सिंह-पर चढनेवाली, सुन्दरसेनावाली, चन्द्रमें स्थानवाली, सुन्दर कीर्तिवाली, संदेहरहित ॥ १४० ॥

बलज्ञाबलदावामा९२०लेलिहानाऽमृताश्रवा॥नि-
त्योदितास्वयंज्योतिरुत्सुकाऽमृतजीविनी १४१॥

टीका-बलकी जाननेवाली, बलकी देनेवाली, वामा ९२० जिह्वा चाटनेवाली, अमृत प्रगट करनेवाली, नित्य उदयरूप, स्वयंज्योति, उत्सुका, अमृतजीविनी ॥ १४१ ॥

वज्रदंष्ट्रावज्रजिह्वावैदेहीवज्रविग्रहा ९३० ॥
मंगल्यामङ्गलामालामलिनामलहारिणी १४२॥

टीका-वज्रकी समान डाढेंवाली, वज्रजिह्वावाली, वैदेही, वज्रकी समान शरीरवाली ९३० मंगलरूपिणी, मङ्गला, माला, मलिना, मलकी हरनेवाली ॥ १४२ ॥

गान्धर्वींगारुडीचान्द्रीकंबलाश्वतरप्रिया ॥ सौदा-
मिनी९४०जनानन्दाभ्रुकुटीकुटिलानना ॥१४३॥

टीका-गान्धर्वी, गारुडी, चान्द्री, कम्बलअश्वतर

नामक नागोंकी प्रिया, सौदामिनी १४० जनोंको आनन्द देनेवाली, भ्रुकुटिसे कुटिलमुखवाली ॥ १४३ ॥

कर्णिकारकराकक्षाकंसप्राणापहारिणी ॥
युगंधरायुगावर्त्तात्रिसंध्याहर्षवार्धनी ॥१४४॥

टीका—कर्णिकारसे करवाली, कक्षा, कंसके प्राण हरनेवाली, युगंधरा, युगका आवर्तन करनेवाली, त्रिसंध्यारूप, हर्षकी बढानेवाली ॥ १४४ ॥

प्रत्यक्षदेवता१५०दिव्यादिव्यगन्धादिवापरा ॥
शक्रासनगताशाक्रीसाध्वीनारीशवासना१४५॥

टीका—प्रत्यक्ष देवता १५० दिव्या, दिव्यगंधवाली दिवापरा, इन्द्रके आसनपर प्राप्त होनेवाली, शक्रकी शक्ति, साध्वी, नारी, शवकी भक्षण करनेवाली ॥ १४५ ॥

इष्टाविशिष्टा१६०शिष्टेष्टाशिष्टाशिष्टप्रपूजिता ॥
शतरूपाशतावर्त्ताविनीतासुरभिःसुरा ॥१४६॥

टीका—इष्टा, विशिष्टा, १६० शिष्टोंको इष्टरूप, शिष्टअशिष्टोंसे पूजित, शतरूपा, शतावर्ता, विनीता, मनोहर, सुगन्धियुक्त सुरा ॥ १४६ ॥

सुरेंद्रमातासुद्युम्ना १७० सुषुम्नासूर्यसंस्थिता ॥
समीक्षासत्प्रतिष्ठाचनिवृत्तिर्ज्ञानपारगा ॥१४७॥

टीका—सुरेन्द्रकी माता, सुद्युम्ना १७० सुषुम्नानाडीरूप, सूर्यमें स्थित, समीक्षा सत्में प्रतिष्ठित, निवृत्तिस्वरूप, ज्ञानकी पारगामिनी ॥ १४७ ॥

धर्मशास्त्रार्थकुशलाधर्मज्ञाधर्मवाहना ॥ धर्माधर्मविनिर्मात्री१८०धार्मिकाणांशिवप्रदा१४८॥

टीका—धर्मशास्त्रके अर्थमें कुशल, धर्मकी जाननेवाली, धर्मवाहना, धर्म अधर्मकी निर्माण करनेवाली १८० धर्मात्माओंको मंगल देनेवाली ॥ १४८ ॥

धर्मशक्तिर्धर्ममयीविधर्मा विश्वधर्मिणी ॥
धर्मांतराधर्ममध्याधर्मपूर्वा धनप्रिया ॥ १४९ ॥

टीका—धर्मशक्ति, धर्ममयी, विधर्मा, संसारके धर्मवाली, धर्ममें अन्तरवाली, धर्ममध्यवाली, धर्मसे पूर्वस्थित, धनप्रिया ॥ १४९ ॥

धर्मोपदेशा १९०धर्मात्माधर्मलभ्याधराधरा ॥
कपालीशाकलामूर्तिःकलाकलितविग्रहा१५०॥

टीका–धर्मके उपदेशवाली ९९० धर्मात्मा; धर्मसे प्राप्त होनेवाली, पृथ्वीकी धारण करनेवाली, कपाली, शाकलामूर्ति, कलाकलितशरीरवाली ॥ १५० ॥

सर्वशक्तिविनिर्मुक्तासर्वशक्त्याश्रयाश्रया ॥ सर्वा
सर्वेश्वरी१०००सूक्ष्मासुसूक्ष्मज्ञानरूपिणी१५१

टीका–सब शक्तियोंसे पृथक्, सब शक्तियोंके आश्रयवाली, सर्वरूप, सर्वेश्वरी १०००सूक्ष्मा, अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञानके रूपवाली ॥ १५१ ॥

प्रधानपुरुपेशानामहापुरुषसाक्षिणी ॥ सदाशिवा
वियन्मूर्तिर्देवमूर्तिरमूर्तिका १००८ ॥१५२॥

टीका–प्रधान पुरुष ईशाना, महापुरुषकी साक्षिणी, सदाकल्याणरूप, आकाशमूर्ति, देवमूर्ति, मूर्तिरहित१००८ तुम हो.तुम्हारे निमित्त नमस्कार है ॥ १५२ ॥

एवंनाम्नांसहस्रेण तुष्टाव रघुनंदनः ॥
कृतांजलिपुटोभूत्वासीतांहृष्टतनूरुहाम् ॥१५३॥

टीका–इस प्रकार हाथ जोडे प्रसन्नमन, रोमांचशरीरहो रघुनंदनने जानकीको प्रसन्न किया॥ १५३॥

भारद्वाजमहाभगयश्चैतत्स्तोत्रमद्भुतम् ॥
पठेद्वापाठयेद्वापिसयातिपरमंपदम् ॥ १५४ ॥

टीका—हे भारद्वाजमहाभाग ! जो कोई इस अद्भुत स्तोत्रको सुन्ताहै, पढताहै वा पढाताहै वह परमपदको जाताहै ॥ १५४ ॥

ब्रह्मक्षत्रियविड्योनिर्ब्रह्मप्राप्नोतिशाश्वतम् ॥
शूद्रःसद्गतिमाप्नोतिधनधान्यविभूतयः ॥१५५॥

टीका—ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,शाश्वतब्रह्मको प्राप्त होतेहैं और शूद्रको सद्गति तथा धनधान्यकी प्राप्तिहोतीहै १५५

भवंतिस्तोत्रमाहात्म्यादेतत्स्वस्त्ययनंमहत् ॥
मारीभयेराजभयेतथाचोराग्निजेभये ॥ १५६ ॥

टीका—इस स्तोत्रके माहात्म्यसे परम मंगल होताहै, महामारीभय राजभय चोर अग्निका भय ॥ १५६ ॥

व्याधीनांप्रभवेघोरेशत्रूत्थानेचसंकटे ॥
अनावृष्टिभयेविप्रसर्वशांतिकरंपरम् ॥ १५७ ॥

टीका—महाघोर व्याधी, शत्रुओंके संकटमें, अनावृष्टिके भमयें सब प्रकारकी शान्ति होतीहै ॥ १५७ ॥

यद्यदिष्टतमयस्यतत्सर्वंस्तोत्रतोभवेत् ॥ यत्रै-
तत्पठ्यतेसम्यक्सीतानामसहस्रकम्॥ १५८॥

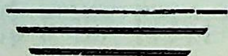
टीका—जो जो इसको इष्ट हो वह सब इस स्तोत्रके पाठसे होजाताहै, जहाँ यह सीतासहस्रनाम पढाजाताहै ॥

रामेणसहितादेवीतत्रतिष्ठत्यसंशयम् ॥
महापापातिपापानिविलयंयांतिसुव्रत ॥१५९॥

टीका—वहां रामके सहित देवी स्थित होतीहै इसमें सन्देह नहीं. हे द्विज ! महापाप और घोर पापभी इससे छूट जातेहैं ॥ १५९ ॥

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अद्भुतोत्तरकांडेसीतासहस्रनामस्तोत्रकथनंनाम पंचविंशातितमः सर्गः ॥ २५ ॥

टीका—इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये अद्भुतोत्तर-काण्डे पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां सीतासहस्र नामस्तोत्रकथनं नाम पंचविंशातितमःसर्गः॥ २५॥



KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

